

जानें हेमा से लता दीदी बनने तक का यादगार सफर

लता मंगेशकर की नज्जि जदिगी के बारे में बहुत कम लोग ही जानते हैं।

लता जी ने संगीत की दुनिया में अपनी सुरीली आवाज से हजारों गान गाए हैं। उनके गानों का दविाना हर कोई है। कई गाने ऐसे हैं जो आज भी लोगों के पसंदीदा गानों में से एक हैं। उनकी नज्जि जदिगी के बारे में बहुत कम लोग ही जानते हैं। लता मंगेशकर का जन्म 1929 में एमपी के इंदौर में हुआ था। वह एक मराठी परिवार से थी। उनके पिता पंडित दीनानाथ मंगेशर थे, वहीं मां का नाम शेवंती थी। लता से पहले उनका नाम हेमा था। कहा जाता है लता के माता-पिता ने एक मराठी नाटक से प्रेरति होकर उनका नाम हेमा से लता रख दिया था।

लता मंगेशकर का बचपन कठनाईयों में बीता है। जब वह 13 साल की थी। तभी उनके सरि से पिता का साया उठ गया था। उनके पिता की दिलि की बीमारी से उनका नघिन हो गया था। पिता के नघिन के बाद परिवार की जम्मेदारी लता के कंधों पर आ गई। लता घर में सबसे बड़ी थी। उनके चार छोटे भाई- बहन आशा, ऊषा, हृदयनाथ और मीना थे। अपने परिवार को पालने के लिए लता जी ने पढ़ाई छोड़ गाना शुरु किया था।

लता मंगेशकर की स्ट्रगल की कहानी खुद उनकी छोटी बहन मीना ने बताई थी। एक इंटरव्यू के दौरान उन्होंने कहा था, कदिदी ने बहुच दुख झेले हैं। 12 साल की उम्र में उन्होंने इतना कुछ देख लिया था। उनके ऊपर छोटी से उम्र में हमारी जम्मेदारी आ गई थी। दीदी के साथ मेरा रश्िता बहन का नहीं मां बेटी का था। मैं बचपन से उसके साथ सांए की तरह घूमती थी। मैं दीदी से सरिफ दो साल छोटी हूं। जब मेरे बाबा गए तब वो 12 साल की थी। मैं 10 साल की थी।

लता जी ने अपना बचपन इंदौर के सखि मोहल्ले में बतियाया है। हालांकि वह परिवार के साथ जल्द ही महाराष्ट्र आ गई थी। वह इंदौर में महज सात साल की उम्र तक रही। जसि घर में लता जी रहती थी। आज वहां मेहता परिवार रहता है। मेहता परिवार ने घर के बाहरी हसिसे में कपड़े का शोरूम खोल लिया है। यह परिवार लताजी की देवी की तरह पूजा करता है। शोरूम खोलने से पहले वे हर दनि उनका आशीर्वाद लेते हैं। उन्होंने शोरूम के एक हसिसे में लताजी का म्यूरल बनवाया है।

लता जी ने अपना बचपन इंदौर के सखि मोहल्ले में बतियाया है। हालांकि वह परिवार के साथ जल्द ही महाराष्ट्र आ गई थी। वह इंदौर में महज सात साल की उम्र तक रही। जसि घर में लता जी रहती थी। आज वहां मेहता परिवार रहता है। मेहता परिवार ने घर के बाहरी हसिसे में कपड़े का शोरूम खोल लिया है। यह परिवार लताजी की देवी की तरह पूजा करता है। शोरूम खोलने से पहले वे हर दनि उनका आशीर्वाद लेते हैं। उन्होंने शोरूम के एक हसिसे में लताजी का म्यूरल बनवाया है।

लता जी ने अपना बचपन इंदौर के सखि मोहल्ले में बतियाया है। हालांकि वह परिवार के साथ जल्द ही महाराष्ट्र आ गई थी। वह इंदौर में महज सात साल की उम्र तक रही। जसि घर में लता जी रहती थी। आज वहां मेहता परिवार रहता है। मेहता परिवार ने घर के बाहरी हसिसे में कपड़े का शोरूम खोल लिया है। यह परिवार लताजी की देवी की तरह पूजा करता है। शोरूम खोलने से पहले वे हर दनि उनका आशीर्वाद लेते हैं। उन्होंने शोरूम के एक हसिसे में लताजी का म्यूरल बनवाया है।

लता जी ने अपना बचपन इंदौर के सखि मोहल्ले में बतियाया है। हालांकि वह परिवार के साथ जल्द ही महाराष्ट्र आ गई थी। वह इंदौर में महज सात साल की उम्र तक रही। जसि घर में लता जी रहती थी। आज वहां मेहता परिवार रहता है। मेहता परिवार ने घर के बाहरी हसिसे में कपड़े का शोरूम खोल लिया है। यह परिवार लताजी की देवी की तरह पूजा करता है। शोरूम खोलने से पहले वे हर दनि उनका आशीर्वाद लेते हैं। उन्होंने शोरूम के एक हसिसे में लताजी का म्यूरल बनवाया है।